आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 4/अंक 1/मार्च 2024
Received: 10/03/2024; Published: 24/03/2024

कविता

जिन्दगी जीना सीखा रही है !

नरपत् देवासी,
बी.एस.सी,
सुराणा कॉलेज (स्वायत्त)
बेगलूरु.

कल गगन में एक फ्लक मैंने जिन्दगी को देखा
वह राहों पर मेरी गुनगुना रही थी।

उम्मीद से ढूँढा उसे इधर – उधर वो
मुझसे आँख मिचौली कर मुस्कुरा रही थी।

एक अरसे के बाद आया मुझे करार
वो मासुम मुझे अपनी गोद में सुला रही थी।

प्रेम से पूछा मैंने जिन्दगी से कि
क्यों खफा है तू मुझसे और मैं तुझसे यह मुझे बता रही थी।

आखिर पूछा मैंने जिन्दगी से कि कम्बखत

तू मुझे इतना क्यों सता रही है।

तो वह मुस्करायी और बोली पगले

मैं जिन्दगी हूँ तुझे जीना सीखा रही हूँ।

****